M17/1/AXHIN/HP1/HIN/TZ0/XX

Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi A: literature – Higher level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau supérieur – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel superior – Prueba 1

Wednesday 10 May 2017 (afternoon)
Mercredi 10 mai 2017 (après-midi)
Miércoles 10 de mayo de 2017 (tarde)

2 hours / 2 heures / 2 horas

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a literary commentary on one passage only.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire littéraire sur un seul des passages.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d’examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario literario sobre un solo pasaje.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

5 pages/páginas
2217 – 0093
© International Baccalaureate Organization 2017

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए।

1.

पूरा शहर परसों से कर्फ़्यू के आगोश में समाया है, हर ओर सन्नाटा, दहशत, दमघोंटू चुप्पी छाई हुई है। दोपहर के सूने, गहन सन्नाटे में कोई कुत्ता भौंकने पर रात्रि के तीसरे-चौथे पहर का भ्रम हो जाता है। सभी लोग घरों में कैद, अजीब सी छटपटाहट महसूस कर रहे हैं विशेषकर पुरुषवर्ग और बच्चे, पता नहीं कब उठेगा कर्फ़्यू? पत्नी रसोई में थी, मैंने वहीं से आवाज़ लगाई, "जरा एक कप चाय बना दो, सिर में भारीपन सा महसूस हो रहा है।" बिना दूध की काली चाय का कप थमाते हुए पत्नी भुनभुनाई, "पता नहीं बगैर काम के ही तुम्हारा सिर भारी क्यों हो रहा है। महीने के अंतिम दिन हैं, सारे डिब्बे खाली हो रहे हैं और तुम चाय पर चाय...।" उसका खीझना भी ज़ायज है। बच्चे सारा दिन घर रहने पर धींगा-मस्ती, मार-पीट, चीख चिल्लाहट मचाते हैं। अचानक गोली चलने की आवाज आई तो बच्चे सहमकर मेरे इर्द-गिर्द बैठ गए। "कुछ लोग कर्फ़्यू के दौरान भी नियम को तोड़ते हुए सड़कों पर आ तोड़-फोड़, मार-पीट करते हैं तो पुलिस को गोली चलानी पड़ती है।" बच्चे हैरत से सब सुन रहे थे। उनके होश संभालने के बाद शहर में कर्फ़्यू का यह पहला अवसर था। सबेरे अखबार वाले ने घंटी बजाई तो लपककर दरवाजे पर पहुंचा। कर्फ़्यू-पास लेकर ये लोग अखबार तो डाल देते हैं। पहले पृष्ठ पर ही बड़े अक्षरों में खबर थी- "मुल्ला हुसैन के लकड़ी के पीठे में कुछ शरारती तत्वों ने देर रात को आग लगा दी। उसके साथ की चार दुकानें, जिनके मालिक शामलाल, मदनलाल, असगरअली तथा इकबालअली हैं, भी पूरी तरह भस्म हो गई हैं।" खबर पढ़ मन वितृष्णा से भर उठा। इत्तफ़ाक से अगले दिन कर्फ़्यू में दो घंटे की ढील दी गई। पत्नी ने जरूरी सामान की सूची के साथ दस किलो गेंहू भी डिब्बे में डाल मुझे थमा दिए। मोहल्ले में स्थित चक्की पर मैंने डिब्बा रखा तो पता लगा करीब पंद्रह लोग पहले ही नंबर लगा चुके हैं। हर दुकान पर ग्राहकों की भीड़ जैसे टूट पड़ी थी। हर कोई जल्दी सामान लेकर शीघ्र घर पर पहुंचना चाहता था। सामान लेकर जब मैं चक्की पर पहुंचा तो पता लगा घंटे भर से बिजली ही गुल थी। इधर पुलिस की गाड़ियाँ पुन: कर्फ़्यू की घोषणा करने लगी थी। निराशा से डिब्बा उठा मैं तेज कदमों से घर में दाखिल हुआ। पत्नी सारा वृतांत सुन मन मसोस कर रह गई। जिस मुल्ला हुसैन की दुकान को आग लगाई गई थी उसका भाई हमारा पड़ोसी था। हमारे घर एकदम सटे हुए थे, फिर भी हमारे संबंध दुआ सलाम तक ही सीमित थे। वैसे उनकी ओर से दोस्ती बढ़ाने की शुरूआत हुई थी, लेकिन मेरी पत्नी ने ही उसे सीमित दायरे में बांध दिया था। उसे किसी मुस्लिम के घर चाय-पानी, खाने से परहेज था। कभी मैं उसके संकुचित दृष्टिकोण का मज़ाक उड़ाता तो वह खफा हो उठती। शहर में भड़के सांप्रदायिक दंगों में अब तक पंद्रह लोगों की जान जा चुकी थी और लगभग सौ से अधिक दुकानों को बुरी तरह से क्षति पहुंचाई गई थी। अगले दिन पुन: दो स्थानों पर भयंकर आगजनी, लूटपाट और छुरेबाजी की घटनाएँ हुईं तो कर्फ़्यू में कोई ढील न देने की घोषणा कर दी गई। पत्नी परेशान-सी बोली, "बच्चे रोटी की मांग कर रहे हैं, कब उठेगा यह कर्फ़्यू?" पत्नी ने बताया चावल भी समाप्त होने को है। अगर और दो दिन कर्फ़्यू न हटा तो क्या खाएँगे? जब तक वेतन नहीं मिलता अगले महीने का राशन लाना संभव नहीं।

इस बार तो मैं और बच्चे भी सारा समय घर पर ही थे अत: राशन कुछ जल्द ही चूक गया था। यह तो सोचा नहीं था स्थिति इतनी बिगड़ जाएगी और कर्फ़्यू इतना लंबा खींच जाएगा। इसी चिंता से रात में नींद नहीं आई। सुबह नीम अंधेरे ही उठ बैठा अखबार की प्रतीक्षा में। आजकल सुबह पक्षियों का कलरव भी सुनाई नहीं पड़ता था। शायद शहर की दहशत से वे भी कहीं दूर चले गए थे। अचानक दरवाजे की कुंडी खटखटाने की आवाज आई तो क्षण भर के लिए घबरा से गए। एक आतंक सा पसर गया। कौन है? "मैं आपकी पड़ोसन कादिर की माँ।" मैंने पत्नी को इशारे से बुलाया और स्वयं दूर हट गया। पत्नी ने दरवाजा खोला, कुछ पूछने से पहले ही कादिर की माँ ने एक छोटा सा कनस्तर पत्नी की ओर बढ़ा दिया- "इसमें आटा है...।" "लेकिन... ।" पत्नी को कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि क्या कहे। शायद वह दुविधा में थी- एक ओर खाली होते राशन के डिब्बे और दूसरी ओर उसी की ओर से मिली सहायता जिसके घर का पानी भी उसे गंवारा नहीं था। "मैं जानती हूँ तुम्हें हमारे घर का कुछ भी खाना पसंद नहीं", लेकिन इस मजबूरी में, कम से कम बच्चों का ध्यान रखते हुए इसे रख लो"। चाहो तो बेशक वापस लौटा देना वैसे हम लोग इतने गैर तो नहीं। ...पत्नी किंकर्तव्यविमूढ़ सी उसका चेहरा ताकती रह गई। इस बार कादिर की माँ कुछ तीखे व अधिकारपूर्ण लहजे में बोली- "अब रख भी लो, बच्चों को भूखा मारना है क्या? यह कर्फ़्यू मरा तो न जाने कब हटेगा? पड़ोसन वापस लौट रही थी... और पत्नी के हाथों में कनस्तर थरथरा था और उसकी आँखों में...

नरेन्द्र कौर छाबड़ा, कथाबिंब, जुलाई-सितंबर (2001)

2.

गंगा

गंगा की श्वेत
धवल, शुभ्र, ज्योतिर्मयी
स्नेहासिक्त, उठती-गिरती-
तरंगावलियाँ मानों कह रहीं,
मत जकड़ो मुझे, बाँधों की बेड़ियों में।
मेरे प्रवाह मेरी निरन्तरता को खण्डित
मत करो।
मुझे बहने दो उन्मुक्त, अविरल, अथक,
अनन्त काल तक।
मुझे तारने दो अपने श्रान्त, क्लान्त, थके-हारे-
लाडलों को,
उन्हें विश्राम करने दो मेरी गोद में
मैं अभी बूढ़ी नहीं थकी नहीं
मुझे तुम्हारे खोखले वादों के
लाठियों के सहारों की ज़रूरत नहीं
मैं अभी समर्थ हूँ अपनी
पवित्रता, निर्मलता और
पुनीतता की रक्षा करने में।
तुम्हारे गन्दे मैले
पापों को धोने में,
बन्द करो मेरे नाम पर
करोड़ो अनुदानों के घोटालों को
वोट बैंकों की
राजनीति को
मेरे लिए कुछ करना है तो
मेरे भूखे नंगे बच्चों को
रोटी और वस्त्र दो
मेरे जल को अपने कारखानों के
गन्दे कूड़े कचरों से मुक्त रखो।
मैं भागीरथी, मैं जननी तुम पुत्र हो।
मुझे मेरे कर्मों से विरत मत करो
गंगा की उठती-गिरती लहरें
कभी मन्द कभी तीव्र स्वरों

मानों हमें आगाह कर रहीं हों
भविष्य की आशंकाओं से॥

डॉ आराधना श्रीवास्तव, साहित्य कुंज (2016)